बेअंत जो अंतु, कंहीं पातो कीनकी,
समुझे जो सामी चए, सुजाखो संतु,
ड्डिठो जंहिं अखिनि सां, भेद बिना भगवंतु,
जिएँ कामिणि पाए कंतु, रती वते रंग में,

सामी साहब कहते हैं, ''परमेश्वर अनंत है, अपार है, बेअंत है। परमेश्वर की थाह कोई ले नहीं सका है। मात्र कोई जाग्रत सजग संत ही परमेश्वर का अनुभव कर उसे समझ सकता है। ऐसे संत ने ही अपने नेत्रों से, बिना किसी भेद के, भगवंत के दर्शन किये हैं। परमेश्वर के अद्‌भुत दर्शन से वह आनंद-विभोर हो जाता है। ठीक उसी तरह जैसे कोई सुंदर स्त्री अपने प्रियतम पति को प्राप्त कर उसके प्रेम के रंग में रंग जाती है।

जगत् का आदि कारण एवं आधार एक चेतन तत्त्व है। इस तत्त्व को 'ब्रह्म' कहा जाता है। 'बृ' का अर्थ है व्यापक । 'बृ' से 'ब्रह्म' शब्द बना है। जो सर्वव्यापक और अविनाशी है, वह ब्रह्म है। ब्रह्म सार्वकालिक है, सार्वभौमिक है। वह अनादि, अनंत, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, एवं मुक्त है। छांदोग्य उपनिषद् में इसे 'भूमा' कहा गया है। यह ब्रह्म का एक लक्षण है। संतों की दृष्टि में ब्रह्म/परमेश्वर ही अंतिम या परम सत्ता है। वेदांत के अनुसार ब्रह्म ही एक अद्वितीय 'सत्' तत्व है। ब्रह्म, माया और ईश्वर, इन तीनों को मिला कर 'परमेश्वर' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'सच्चिदानंद' भी इन्हीं का नाम है। सामान्य रूप से बोलने में 'ब्रह्म' और 'ईश्वर'/'परमेश्वर' एक ही सत्ता के द्योतक हैं। सूक्ष्म अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में अंतर देखा जा सकता है। 'ब्रह्म' का स्वरूप नित्य निर्गुण है, जो निराकार है, अगोचर और अनंत है, अगाध है। ज्ञानीजनों को यह स्वरूप पसंद है। भक्त-जन 'ईश्वर' के स्वरूप से एक रूप होकर पवित्र बन जाते हैं। वे प्रेममय भक्ति द्वारा ईश्वर-स्वरूप की प्राप्ति करते हैं। महाकवि सामीजी भी यही बात कहते हैं। कि अंतर्ज्ञान प्राप्त करने वाला कोई संत ही परमेश्वर की थाह ले सकता है। अर्थात् ऐसा संत, जो सजग है, जिसने अपने मन से भेदभाव निकाल दिया है, जो द्वैत-भावना से रहित हो गया है, वही परमेश्वर को पा सकता है तथा उसके मिलन का अलौकिक आनंद प्राप्त कर सकता है। लौकिक प्रेम हो या अलौकिक प्रेम हो, दोनों में प्रियतम-प्रियतमा की एकरूपता एवं तन्मयता जरूरी है।

नयनों की करि कोठरी, पुतरी पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारिकै, पिय को लिया रिझाय।।

■